



**शिमला।** बिजनेस एवं व्यापार विंग द्वारा आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन द्वारा उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. गीता, शिमला व्यापार मंडल के सेक्रेटरी इन्द्रजीत सिंह, जे.एल.शाह, थर्ड आई सोल्यूशन मुम्बई, पदमा, जी.एस.एम. नाबार्ड बैंक हि. प्र. ब्र.कु. डॉ. मधु, ब्र.कु. अनीता, ब्र.कु. रोमा।



**शिवान-बिहार।** चैतन्य देवियों की झांकी का अवलोकन करने के पश्चात लालबाबू सोनी, ब्र.कु. सुधा, ब्र.कु. प्रेम, ब्र.कु. निर्मल दिखाई दे रहे हैं।



**सुन्नी-शिमला।** सांसद प्रतिभा सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. शकुंतला। साथ है ब्र.कु. रेवा दास।



**शाजापुर।** विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष एवं दशहरा उत्सव समिति के संयोजक शिवाजी सोनी, ब्र.कु. प्रतिभा को सम्मान पत्र द्वारा सम्मानित करते हुए। साथ है अन्य गणमान्य जन।



**सोनभद्र।** शांतिदूत साइकिल यात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए विधायक अविनाश कुशवाहा। साथ है ब्र.कु. सुमन।



**इन्दौर-मप्र।** शांतिदूत साइकिल यात्रा के समापन कार्यक्रम में ब्र.कु. आरती को सम्मानित करते हुए ओंकारेश्वर मंदिर के मुख्य ट्रस्टी राव देवेन्द्रसिंह, माया सिंह प्राचार्य एवं आशाराम आवासे।

कुछ लोग कहते हैं कि "हमें ईश्वरीय ज्ञान मार्ग में आए हुए बहुत थोड़े ही हुए हैं जबकि अन्य कुछ लोग हमारी तुलना में बहुत वर्ष पहले से ही ज्ञान और योग का पुरुषार्थ करते चले आ रहे हैं। अतः अब जब हम विश्व में परिस्थितियों को बहुत तीव्र गति से देखते हैं और ऐसा महसूस करते हैं कि अब सृष्टि के महाविनाश और सतयुग के प्रारंभ में बहुत थोड़ा ही समय रह गया है तो हमें ऐसा महसूस होता है कि हमें पुरुषार्थ के लिए बहुत कम समय मिला है"। मान लीजिए कि किसी को योगाभ्यास, दिव्य-गुणों की धारणा इत्यादि के लिए 50 वर्ष मिले और हमें तो इस पुरुषार्थ में लगे हुए कुल 10 वर्ष ही हुए हैं, तब हम ऐसा सोचते हैं कि "हमारा तो उन योगाभ्यासियों से कोई मुकाबला नहीं है जिन्हें कि 50 वर्ष हुए हैं। ऐसा सोच कर मन थोड़ा उदास सा हो जाता है। ऐसा होना स्वाभाविक है ना?"

इस विषय में ये सोचने की ज़रूरत है कि पृथ्वी द्वारा सूर्य के चक्कर लगाने में जो दिन-रात बनते हैं और दिनों से जो मास और मास से फिर वर्ष बनते हैं, उस गणित के आधार पर तो निस्संदेह 50 वर्ष हो गये हैं परन्तु वास्तव में प्रश्न इन वर्षों का नहीं है। प्रश्न तो ये है कि उन्होंने 50 वर्षों में से कितना भाग 'युक्ति-युक्त' पुरुषार्थ में लगाया है। यदि उनका पुरुषार्थ ढीला-ढाला रहा है तब तो उनके 50 वर्ष उनके अनुसार से केवल 5-7 वर्ष या 8-10 वर्ष ही के बराबर है। उदाहरण के तौर पर, एक व्यक्ति एक देश से दूसरे देश और वहाँ से तीसरे देश में भूमार्ग से बैलगाड़ी के द्वारा जाता है, दूसरा व्यक्ति मोटर-साइकिल से जाता है, तीसरा रेलगाड़ी के माध्यम से और चौथा हवाई जहाज के द्वारा। स्पष्ट है कि बैलगाड़ी से सड़क पर यात्रा करने वाले को जिस मंजिल तक पहुँचने में 10 वर्ष लगेंगे, उस मंजिल पर दूसरा व्यक्ति तो वायुयान के द्वारा शायद 5 घण्टों में ही पहुँच जाएगा। अतः चींटी मार्ग से जाने में और विहंगम मार्ग से जाने में कई वर्षों का अन्तर पड़ जाता है। इसी प्रकार, अध्यात्म में प्यादे, घुड़सवार, रथी, महारथी और अतिरथी अलग-अलग गति वाले पुरुषार्थी होते हैं। जो उड़ती कला वाले हैं वही वास्तव में तीव्र पुरुषार्थी हैं, दूसरे सब नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हैं। जो प्यादे हैं वे तो रास्ते में छोटा-सा टीला आने पर भी रुकावट महसूस करते हैं और उनकी गति मन्द हो जाती है परन्तु जो उड़ती कला वाले हैं वे तो ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों के भी ऊपर से उड़ जाते हैं। रास्ते में नदी-नाले, यहाँ तक कि समुद्र भी उनके लिए रुकावट नहीं होते। ऐसे ही आध्यात्मिक पुरुषार्थ में उड़ती कला, चढ़ती कला या तीव्र पुरुषार्थ वाले बड़ी-बड़ी समस्याओं, आपदाओं और विघ्नों को भी रुकावट नहीं मानते बल्कि ज्ञान और योग के पर लगा कर गगनगामी हो जाते हैं। इससे उनका समय बहुत बच जाता है और उनको जो थोड़ा समय मिलाता है वह भी दीर्घ-काल हो जाता है।

कुछ लोग ऐसे हैं जो छोटी-छोटी बातों में अपना समय व्यर्थ गंवाते रहते हैं। इसलिये अधिक समय से आए हुए होने के बावजूद भी वे पीछे रह जाते हैं। उनका समय बर्बाद

हो जाता है। अतः प्रश्न उठता है कि वे कौन-कौन सी मुख्य बातें हैं जिनके कारण दीर्घ समय भी पुरुषार्थ के लिए छोटा हो जाता है अथवा वे कौन से ऐसे विघ्न हैं जिनके कारण व्यक्ति तीव्र पुरुषार्थ नहीं कर सकता और उसकी गति साधारण से भी मन्द हो जाती है। यहाँ हम उनमें से कुछेक का उल्लेख करेंगे।

### आलस्य

आलस्य मनुष्य का बहुत ही समय खराब करता है। कभी शारीरिक कारणों से और कभी किन्हीं मानसिक कारणों से मनुष्य ये सोचता है कि अभी मैं ये कार्य नहीं कर सकता। उसे विश्राम और निद्रा अधिक प्रिय हो जाते हैं। वह मेहनत से बचना चाहता है। उसके मन में ये सूक्ष्म भावना बनी रहती है कि कार्य न करना पड़े। आगे बढ़ने का अवसर मिलने पर भी वह अपनी सुस्ती की वजह से आगे नहीं बढ़ पाता। प्रातः अमृतवेले चुस्त होकर योग में नहीं बैठता बल्कि आलस्यवश शैथ्या पर पड़ा रहता है। सोचता

## तीव्र पुरुषार्थ और समय का गणित

अध्यात्म में प्यादे, घुड़सवार, रथी, महारथी और अतिरथी अलग-अलग गति वाले पुरुषार्थी होते हैं। जो उड़ती कला वाले हैं वही वास्तव में तीव्र पुरुषार्थी हैं, दूसरे सब नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हैं।

-ब्र.कु. जगदीश

है कि थोड़ा और सुस्ता लूँ, योगाभ्यास तो बाद में भी कर सकता हूँ। शरीर द्वारा सेवा करने की बजाय वह दूसरों से सेवा लेना अधिक पसन्द करता है और, इस प्रकार, अपने जीवन को सफल नहीं कर पाता। मान लीजिए कि किसी व्यक्ति को ज्ञान और योग के इस पुरुषार्थ रूपी मार्ग पर आये 50 वर्ष हुए हैं। यदि उसमें से 5 वर्ष बार-बार आलस्य के वश होने के कारण वह तीव्र पुरुषार्थ नहीं कर सका तब उसके तो 50 वर्ष में से बाकी 45 वर्ष ही उसे मिले। 5 वर्ष तो उसने आराम-पसंदी में और समय हराकर करने में लगा दिये। इस प्रकार, उसने 5 वर्ष का अनमोल समय गंवा दिया।

### अलबेलापन

कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनके स्वभाव में गम्भीरता बिल्कुल नहीं होती अथवा कम होती है। वे किसी महत्वपूर्ण बात को भी ठीक तरह महत्व नहीं देते। हर बात में सोचते हैं कि "क्या फर्क पड़ता है"। जब उनको ये कहा जाता है कि सृष्टि का महाविनाश निकट भविष्य में होने वाला है और इसलिए योगयुक्त अवस्था धारण करने की आवश्यकता है तो वे कहते हैं-"अरे यार, सब-कुछ हो जाएगा; तुम चिन्ता मत किया करो। सारा समय योग थोड़े ही करना है। हम तो सुख पूर्वक चलेंगे फिर जो कुछ होगा सब देखा जाएगा। सभी लोग सतयुग में थोड़े ही जायेंगे? जो बाकी दुनिया के साथ होगा, वही हमारे साथ होगा। हर वक्त योग-योग की बात करना हमारे मन को अखरता है। हम तो ऐसी जीव हैं और हम से ज्यादा

रस्सा-कसी नहीं होती"। इस प्रकार अधिक समय मिलने के बावजूद भी उनका काफी समय तो अलबेलेपन के कारण ईश्वरीय कमाई के बिना ही निकल जाता है। अलबेलेपन के स्वभाव वाले व्यक्ति को यदि 50 वर्ष भी इस पुरुषार्थ के लिए मिले हों तो उसके कम-से-कम 8-10 वर्ष तो ये अलबेलापन ही खा जाता है। वह 5 वर्ष तो आलस्य में और 8 वर्ष अलबेलेपन में गंवा बैठता है और, इस प्रकार शेष उसके 37 वर्ष रह जाते हैं। कर दिया तो बाकी उसके क्या पल्ले पड़ा?

### सहनशीलता की कमी

कुछ लोग स्वभाव के बहुत तेज होते हैं। जब उन्हें कोई व्यक्ति कुछ समझाता-बुझाता है, सावधानी देता है अथवा कुछ डांट-डपट लगाता है तो वे बहुत जल्दी ही महसूस कर जाते हैं। वे केवल उसी ही समय महसूस नहीं करते बल्कि चिरकाल तक उनके मन में वो बात चुभती रहती है। वे बार-बार इस घटना को दूसरों से वर्णन करते हैं। कोई भी बात असह्य लगने के कारण उनके मन में घृणा-द्वेष, प्रीति का अभाव, सम्मान की कमी तथा खुशी को च्यूनता बनी ही रहती है। इन सबके कारण वे उन्नति नहीं कर पाते। उनका मन योगयुक्त नहीं हो सकता क्योंकि मन को खटकने वाली बात उन्हें बार-बार याद आती है। इस प्रकार, मान लीजिए कि छोटी-बड़ी बातों को सहन न कर सकने के कारण किसी व्यक्ति का समय खराब होता रहता है तो 50 वर्षों में से उसके 15 वर्ष तो इसी में बेकार हो जाते हैं। इतना समय केवल बेकार ही नहीं होता बल्कि नकारात्मक स्वभाव-संस्कार बन जाने के कारण वह अधिक ही पतन की ओर जाता है और उसका नया कर्मों का खाता बनता रहता है। इस तरह 50 वर्ष में से 37 वर्ष तो पहले ही रह गए थे और 15 वर्ष और घट जाने के कारण बाकी 22 वर्ष ही बचते हैं। इसके बाद भी जो उसके नये विकर्म बनते हैं, अब उनको समाप्त करने के लिए जितना समय चाहिए, वह तो मालूम नहीं कि उस व्यक्ति को कितना समय लगेगा। इस पर तो ये उक्ति लागू होती है कि "लेने के देने पड़े"। आये थे कमाई करने, वह तो बहुत थोड़ी ही की और नुकसान अधिक कर दिया तो बाकी उसके क्या पल्ले पड़ा?

### बीती बातों को याद करना

ऐसे भी व्यक्ति होते हैं जो भगवान को याद करने की बजाय बीती बातों का चिन्तन करते रहते हैं, "फलां अवसर पर फलां ने बात कही थी जो कि बिल्कुल ही घटिया थी; तब उसका व्यवहार बहुत खराब था..." वे इस प्रकार सोचते रहते हैं। वे इन्हीं बातों को सोचने में समय निकाल देते हैं। 'पास्ट को पास्ट' करके वे पास विद आनर्स होने का पुरुषार्थ नहीं करते। बीती को बिसार कर वे आगे की सुधि नहीं लेते। आज के दिन भी वे कई वर्ष पहले की यादों में गोता लगाकर तब के कटु अनुभव में जलते-भुनते रहते हैं। वे अतीन्द्रिय सुख प्राप्त नहीं कर सकते। वे उल्टी माला अथवा दुःख की माला फेरने के कारण मालामाल नहीं हो सकते। परिणाम ये होता है कि जीवन का अनमोल समय भूतकाल के भूतों के वश ही कटशेष पेज 7 पर